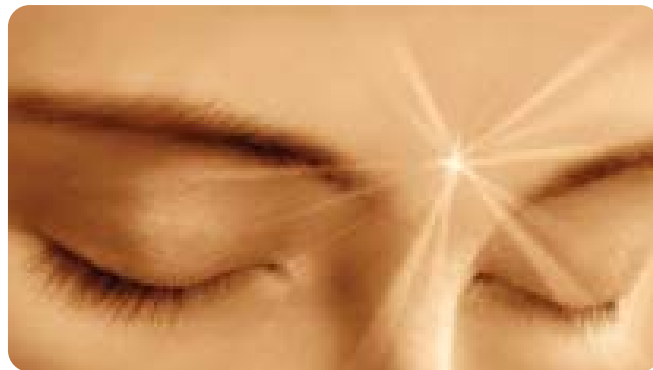


जागते र्हो जगाते र्हो



सुनसान गहराती कलिमा की रात। ठाक-ठाक की आवाज़ के साथ जागते र्हो, जगाते र्हो का कर्णभेदी कर्कश स्वर.....। गलियारों में रात का पहरेदार, अलख जगाते....। सुनते हैं हम सब। जिज्ञासा उठी....क्यों रात भर जगाता रहता है। शांति से सोने के लिए तो उसको वह काम दिया गया है फिर क्यों हमें जगाता रहता है।



साधना के क्षेत्र में सतत् जागरूकता ज़रूरी है। हम भगवान के महावाक्य सुनते हैं। कदम-कदम पर ताकीद की जाती है - सावधान! समय कम है, गफलत मत करो। जगाना ज़रूरी है, क्योंकि पलक झपकते सबकुछ बदल सकता है। चिर संचित साधना विकृतियों वश पल भर में नष्ट हो सकती है। जीवन-यात्रा में अपना वाहन निश्चित ही बड़ी सतर्कता से चलाना है। कदम-कदम पर जोखिम है। जान के लाले पड़ सकते हैं। कौन, कब, कहां, क्या हो जाये कहना मुश्किल है। सावधानी हटी, दुर्घटना घटी।

कहते हैं - महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के साथ बैठे ज्ञानोपदेश कर रहे थे। एक मक्खी चेहरे पर बैठी तो उसे बुद्ध ने उड़ा दिया। मक्खी के उड़ने के बाद भी लगातार बुद्ध को वही क्रिया दोहराते देख उनके शिष्य आनंद ने पूछा - भंते! मक्खी तो है नहीं फिर ऐसा उपक्रम बार-बार क्यों? बुद्ध ने कहा - पहले तो हाथ अपने आप उठ गये थे बिना मेरे ध्यान किये। अब इसे मैं ध्यान से उठा रहा हूँ कि मैंने कैसे उड़ाया था।

साधना का अपरिमित क्षेत्र है। इसकी सूक्ष्मता को समझने के लिए चतुर्मुखी बनना ही पड़ता है। यद्यपि जीवन के किसी भी क्षेत्र में दूरदर्शिता के बिना सफलता संभव नहीं है, तथापि साधना के क्षेत्र में साधक को अपने मन, वाणी, कर्म एवं संस्कारों पर सूक्ष्म एवं तीक्ष्ण दृष्टि रखनी पड़ती है।

करें स्वयं को सावधान

बार-बार गलती के बावजूद स्वयं को पुरुषार्थी कहते रहना - यह पुरुषार्थी का यथेष्ट लक्षण नहीं है। अतः पुरुषार्थी को चाहिए कि वह विगत अनुभवों से सीखकर स्वयं को इतना सावधान करे कि व्यर्थ विकल्प के शत्रु उसके राज्य में घुसपैठ नहीं कर सकें। अटेंशन के पहरेदार झपकी भी न ले सकें। अपनी गुप्तचर संस्थायें संपूर्ण सम्यक सूचनायें प्रदान करती रहें। सुरक्षा सेनायें सशक्त हों। कोई घर का भेदी न हो। पड़ोसी राष्ट्रों से भी मधुर संबंध बने रहें ताकि आपात काल में सहयोग लिया जा सके।

सतत जागरूकता के साथ-साथ सहज सजगता भी हो - इन चक्षुओं के खुले रहने को सदा जागरण नहीं कहते। बाहर के नेत्र तो खुले हैं किंतु ज्ञान के, ध्यान के एवं

समझदारी तथा सावधानी के नेत्र बंद हैं। हम आम बोल-चाल की भाषा में प्रयोग करते हैं कि मैं क्या करूँ। ऐसा करना नहीं चाहता था लेकिन कर डाला। उससे मेरा वैमनस्य नहीं है लेकिन मुंह से निकल गया, वैसे मेरा भाव ऐसा नहीं था। यानि मैं ऐसा चाहता नहीं था, हो गया, कर बैठा, बोल दिया आदि-आदि। इसे ही सुषुप्त अवस्था कहते हैं। मानसिक

पराधीनता या पराभूत होना यही तो है। कर्मेन्द्रियों की यही तो दासता है। यही तो है मन की व माया की गुलामी। संस्कारों की यही चाकरी है।

एक कुशल सैनिक की तरह साधक को

सदा सतर्क रहने की आवश्यकता है, अन्यथा विश्वामित्र की तपस्या की भांति चिरसंचित परिश्रम आँख खुलते ही व्यर्थ हो सकता है। अंतरनेत्र खुले रहें किसी भी संभावित घटना को भली भांति देखने व समझने के लिए। जैसे माँ भोजन पका रही हो फिर भी सहज ही खेलते हुए बच्चे की ओर ध्यान रहता है। स्नेह सम्बन्धों में परस्पर तादात्म्य स्थिति होती है। शब्द टंकण करते टाइपिस्ट का ध्यान अपने कर्म में सहज ही हो जाता है।

सतत जागरूकता अर्थात् भय व तनाव से आतंकित होना नहीं - यहां एक बात स्पष्ट समझने की है कि सतत् जागरूकता को भय और तनाव से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। भय चाहे वह काल का हो या माया का अथवा कुछ अन्य। प्रायः भय व आतंक के क्षणों में और ही मतिभ्रम व किंकर्तव्यकविमूढ़ होने की संभावना होती है। ऐसे मौके पर निरंतर सतर्कता की कोई गारंटी नहीं, और तनाव के क्षणों में तो धैर्य एवं विवेक की नाव करीब अब उल्टी कि तब उल्टी जैसी स्थिति होती है। अतः ज्ञान का दीप सतत् प्रज्वलित रहे, जिससे प्रगति का पथ आलोकित रहे, परिस्थितियों व विघ्नों का अंधेरा कितना घना क्यों न हो वह प्रकाश के समक्ष कुछ भी नहीं। ध्यातव्य बातें - ईश्वरीय ज्ञान में भी कोई पुरुषार्थी कितना ही वरिष्ठ, दीर्घाभ्यासी एवं पारंगत क्यों न हो, उसकी सेवा बहुत अच्छी भी क्यों न हो किंतु सभी को ही अंतिम क्षणों तक सावधान रहने की ज़रूरत है। क्योंकि विपरीत परिस्थितियों में लगातार लड़ते-लड़ते मन का संयम व धैर्यता का बांध टूट सकता है। इसलिए ईश्वरीय महावाक्य है कि तुम्हें जब तक जीना है, ज्ञानामृत पीते रहना है। अतः ज्ञान और योग के बल से कुसंस्कारों को व माया के सूक्ष्म चालों से निरंतर सावधान रहने की बड़ी ज़रूरत है।

सहज सजगता अर्थात् स्मृति स्वरूप

आत्माभिमानी स्थिति एवं परमात्म स्मृति के साथ अपने कर्तव्य की सहज स्मृति हमारे मन में निरंतर रहे। जिसे हम स्वरूप, स्वधर्म, स्वपिता, स्वदेश, स्वधाम, स्वलक्ष्य, स्वलक्षण

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू के रूप में जानते हैं। यही सहज स्मृति स्वरूप बनना ही सहज सजगता है।

ज़रा ध्यान दें कि हमें पुरुषार्थ में किन-किन बातों के प्रति निरंतर सजग रहने की ईश्वरीय प्रेरणा मिली है...

स्वयं के प्रति जागरूकता - स्वयं को आत्मा निश्चय कर इस देह के द्वारा पुण्य अर्जित करना, यही पुरुषार्थ है। परमात्मा को करनकरावनहार मानकर स्वयं को निमित्त करनहार समझकर साक्षी हो पार्ट बजाना - यह स्वयं के प्रति जागरूकता है। मैं आत्मा इस देह साधन के द्वारा कर्म कर रहा हूँ। मैं आत्मा राजा इस देह की राजधानी में भृकुटि सिंहासन पर विराजमान होकर शासन कर रहा हूँ। मेरे अधीन समस्त कर्मेन्द्रियां हैं। मैं आत्मा कर्ता देह प्रकृति से अलग हूँ....।

समय के प्रति जागरूकता - समय, शक्तियां एवं संकल्प सबसे अनमोल खज़ाने हैं किंतु संगमयुगी समय तो युगों में सर्वश्रेष्ठ एवं परमकल्याणकारी तथा बहुत ही महत्वपूर्ण



है। इसका सदुपयोग अर्थात् सदा-सर्वदा संपूर्ण कल्प में पद्मापदम भाग्यशाली बनना।

साध्य-आराध्य एवं साधना के प्रति जागरूकता - परमात्मा से आत्मा का सर्व संबंधों से स्नेहयुक्त मिलन होता रहे। श्वास एवं संकल्प में निरंतर ईश्वरीय स्मृति रहना प्रायः यही प्रत्येक साधक की सतत साधना रहती है।

संस्कारों एवं संकल्पों के प्रति जागरूकता - बिना किसी अपेक्षा के सर्व के प्रति सद्भावना रखते सर्व को सुख-शांति आदि का जो ईश्वरीय वर्सा हमें मिला है, सबमें बांटते जाना तथा संकल्प, वचन व कर्म से सुखदायी बनना - यही हमारा सामाजिक उत्तरदायित्व है। हमारा जीवन सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बन सके - ऐसा आदर्शमय जीवन एवं तन-मन-धन से स्वर्ग की स्थापना में समर्पित रूप से लग जाना निश्चित ही समाज एवं सम्बंधों के प्रति सजगता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात बिल्कुल साफ हो जाती है कि यदि हम सबकी उपेक्षा करके साधना पथ पर बढ़ेंगे तो निश्चित ही यह अदूरदर्शिता होगी। इस आध्यात्मिक यात्रा में सफलता से गंतव्य पर पहुंचने के लिए सम्पूर्ण सावधानी बरतनी होगी। हमारे ज्ञान नेत्र सभी दिशाओं में सम्पूर्ण रूप से खुले रहें ताकि हर संभावित घटना का सम्यक रूप से सामना किया जा सके।



आबू रोड-राज.। ब्रह्माकुमारीज के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित 'किसान सशक्तिकरण तथा वृक्षारोपण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में वृक्षारोपण के पश्चात् पानी डालते हुए जिला प्रमुख पायल परसराम पुरिया। साथ हैं प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. राजू, दांतीवाड़ा प्रोजेक्ट के डी.एफ.ओ. अग्निहोत्री जी, ब्र.कु. भरत, ब्र.कु. मोहन सिंघल तथा अन्य।



सीतापुर-उ.प्र.। तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित 'व्यसनमुक्ति जागृति रैली' का शुभारंभ करते हुए चेयरमैन रश्मि जायसवाल। साथ हैं ब्र.कु. योगेश्वरी व अन्य।



उकलाना मण्डी-हरियाणा। पूर्व विधायक नरेश सेलवाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दीपक, माउण्ट आबू। साथ में समाजसेवी टेकचन्द सिंगला, ब्र.कु. किरण तथा अन्य।



नवाँशहर-एस.बी.एस. नगर(पंजाब)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् डिप्युटी कमिश्नर सोनाली गिरी को ईश्वरीय पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. राम तथा ब्र.कु. पोखर।



दिल्ली-ववाना। योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में निगम पार्षद अंजू देवी, पूर्व विधायक सुरेन्द्र कुमार, स्वामी विवेकानंद, ब्र.कु. चंद्रिका तथा अन्य।



जयपुर-राजापार्क। बालिकाओं के लिए आयोजित 'पर्सनालिटी डेवलपमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ प्रतिभागी बालिकाएँ।